



॥ श्री गायत्री क्षमा स्तोत्रम् ॥
॥ मङ्गल करनिं गायत्री सुखधाम ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री गायत्री क्षमा स्तोत्रम् ॥

हे वेदमाते! जगज्जननि! करुणासागरि गायत्रि।
भक्तवत्सले, ज्ञानप्रदे, मम अपराधान् क्षमस्व मे॥
अज्ञानवशात् यदि मन्त्रोच्चारणे दोषः कृतो मया।
भावहीनं वा पूजनं, तत् सर्वं क्षन्तुमर्हसि॥

विधिहीनं क्रियाहीनं श्रद्धाहीनं कृतं मया।
भक्तिभावसमायुक्तं गृहाण परमेश्वरि॥
न जानामि ध्यानयोगं, न जानामि तवार्चनम्।
यथाशक्ति कृतां पूजां, कृपया सफलां कुरु॥

मनसा वाचा कर्मणा, यद् दोषं समुपार्जितम्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि, प्रसन्ना भव सर्वदा॥
त्वमेव माता मे नित्यं, त्वमेव शरणं मम।
त्वमेव ज्ञानदात्री च, त्वमेव परमागतिः॥

मोहं, क्रोधं, मदं, लोभं, अहंकारं च नाशय।
सद्बुद्धिं मे प्रयच्छ त्वं, धर्ममार्गं नियोजय॥
मम कुले सदा लक्ष्मीः, मम गेहे शुभं भवेत्।
आरोग्यं, आयुः, सौभाग्यं, भक्ति-ज्ञानं च देहि मे॥

त्वत्पादाम्भोजसेवायां निश्चला मे मतिर्भवेत्।
गायत्रि त्वत्प्रसादेन जीवनं सफलं भवेत्॥
करचरणकृतं दोषं, वाक्कायजमनोगतम्।
श्रवण-नयनजं वापि, क्षमस्व वेदमातरि॥

अन्ते त्वदीयं स्मरणं, मध्ये त्वदीय कीर्तनम्।
आदौ त्वदीय वन्दनं, सर्वं मे सफलं कुरु॥

प्रार्थना

हे जगज्जननी गायत्री माता!

यदि मेरी पूजा, जप, ध्यान, स्तुति या आराधना में किसी प्रकार की त्रुटि, अशुद्धि या भूल हुई हो, तो अपनी असीम करुणा से मुझे क्षमा करें। मेरे हृदय को पवित्र करें, बुद्धि को प्रकाशमय बनाएं और सदैव सत्य, धर्म, ज्ञान तथा सेवा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दें।

